Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the *'Committee on Publication Ethics'*

Online ISSN:2584-184X

Research Article

डिजिटल कम्युनिकेशन स्किल फॉर लीडर्स एंड टीम्स

डॉ. रमा सिंह *

सहायक आचार्य, ओम कोठारी शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान,कोटा, राजस्थान, भारत

Corresponding Author: *डॉ. रमा सिंह

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.18611356

सारांश

"In the digital age, effective communication means not just saying the right but saying it on the right platform, at the right time and in the right tone to resonate with your audience"

भारत सरकार ने साल *2015* में 'डिजिटल इंडिया' नाम की पहल की थी जिसका मकसद देश को डिजिटल रूप से सशक्त बनाना था। सरकार का उद्देश्य समाज को सशक्त व अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाना था। संचार साधनों में चरणबद्ध तरीके से विकास हुआ है पहले वॉइस कॉल रेडियो और टेलीफोन प्रसार प्रचलन में आया भारत में डिजिटल संचार का आगमन *20*वीं शताब्दी के मध्य में शुरू हुआ। *21*वीं शताब्दी में भारत अपने नागरिकों की आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए प्रयास करेगा जहां सरकार और उसकी सेवाएं नागरिकों के दरवाजे पर उपलब्ध हो और लंबे समय तक सकारात्मक प्रभाव की दिशा में योगदान करें। भारत हालांकि सॉफ्टवेयर की एक महा शक्ति के रूप में जाना जाता है फिर भी नागरिकों के लिए इलेक्ट्रॉनिक सरकारी सेवाओं की उपलब्धता अभी भी अपेक्षाकृत कम है। डिजिटल इंडिया प्रत्येक नागरिक के लिए इंफ्रास्ट्रक्चर उपयोगिता के रूप में उच्च गति का इंटरनेट सभी ग्राम पंचायत में उपलब्ध कराया जाएगा। जीवन से मृत्यु तक डिजिटल पहचान, आजीवन, अद्वितीय, ऑनलाइन और प्रामाणिक होगी। मोबाइल फोन और बैंक खाता व्यक्तिगत स्तर पर डिजिटल और वित्तीय क्षेत्र में भाग लेने के लिए सक्षमता प्रदान करेगा। उनके इलाके में कॉमन सर्विस सेंटर खोला जाएगा। देश में निरापद और सुरक्षित साइबर स्पेस होगा। डिजिटल इंडिया का कार्य क्षेत्र परिवर्तन को साकार करने के लिए कार्य करना है ।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2584-184X
- **Received:** 02-01-2026
- **Accepted:** 23-01-2026
- **Published:** 10-02-2026
- **MRR:**4(2); 2026: 124-129
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

डॉ. रमा सिंह. डिजिटल कम्युनिकेशन स्किल फॉर लीडर्स एंड टीम्स. इंडियन जर्नल ऑफ मॉडर्न रिसर्च रिव्यू. 2026;4(2):124-129.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

मुख्य शब्द: लीडर्स, टीम, डिजिटल, तकनीकी संचार,

प्रस्तावना

आई.टी. (इंडियन टैलेंट) $ आई.टी. (इनफार्मेशन टेक्नोलॉजी)=आईटी इंडिया टुमारो भारत को एक उज्जवल भविष्य के लिए तैयार करना। परिवर्तन को सक्षम करने के लिए प्रौद्योगिकी को केंद्रीय बनाना। एक शीर्ष कार्यक्रम बनाना जो कई विभागों तक पहुंचे डिजिटल इंडिया कार्यक्रम में कई मौजूदा योजनाओं को पुनर्गठित और पुनर्केन्द्रित एवं एक सुगठित ढंग से लागू किया जाएगा। डिजिटल इंडिया के रूप में कार्यक्रमों की आम ब्रांडिंग और उनके परिवर्तनकारी प्रभाव पर प्रकाश डाला जाएगा। वास्तव में डिजिटल भारत सरकारी विभागों एवं भारत के लोगों को एक दूसरे के पास लाने की भारत सरकार की एक पहल है। यह नागरिकों को आजीवन अद्वितीय ऑनलाइन और प्रामाणिक डिजिटल पहचान प्रदान करेगा। यह बैंक खातों को संभालने, वित्तीय प्रबंधन और सुरक्षित साइबर स्पेस शिक्षा, दूरस्थ शिक्षा आदि जैसी ऑनलाइन सेवाओं तक पहुंच प्रदान करेगा। डिजिटल इंडिया में तकनीकी सुविधाओं पर विशेष बल दिया जाएगा।

टीम के लीडर्स व टीम के सदस्यों के बीच डिजिटल संचार के द्वारा आपसी सहयोग से कार्य किया जाता है। Wang (2010) ने अपने अध्ययन मे बताया कि डिजिटल टेक्नोलॉजी सीखने के अनुभव में सुधार करती है डिजिटल साधन ज्ञान का निर्माण व विस्तार करते हैं। Lai, (2011) तथा Sangeeta and Saileela 2021 ने अपने अध्ययन

© 2026 डॉ. रमा सिंह. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

में बताया की ऑनलाइन सहयोगात्मक सीखने से सूचनाओं का आदान-प्रदान नहीं होता है। किंतु साथ में ऑनलाइन कार्य करने से समस्या का समाधान हो सकता है। इससे सामाजिक सद्भावना भी बढ़ती है। Blau, Shamir-Inbal and Audiel (2020) ने अपने अध्ययन में बताया कि ऑनलाइन शिक्षण से स्वयं शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। वह टीम के सदस्य अपने आप में सुधार कर सकते हैं। ब्रॉडबैंड कमीशन का सस्टेनेबल डेवलपमेंट (2017) पेज 108 के आधार पर हम कह सकते हैं कि शैक्षिक रूप से कार्य करने वाले ग्रुपों में वर्तमान में उच्च स्तर का ऑनलाइन सहयोगात्मक स्तर पाया जाता है डिजिटल कौशल के कारण सामाजिक जागरूकता स्वयं प्रबंधन सामाजिक व भावनात्मक विकास होता है। इंप्रूव्ड कोलाबोरेशन रिलेशनशिप एंड कम्युनिकेशन स्किल इन स्टूडेंट ग्रुप हिस्ट्री गाना एल एट (2021) ने अपने अध्ययन में बताया गया है कि सीखने के लिए प्रतिभागियों के बीच में सामंजस्य होना चाहिए। तभी आपसी संबंध सशक्त बनते हैं। lAragon (2003) ने अपने अध्ययन में बताया कि वह ग्रुप में सुविधाजनक ढंग से काम कर सकते हैं। Hara born and Angeli (2000) ने अपने अध्ययन में बताया कि ग्रुप में सीखने से सीखने वालों के बीच अच्छी तरह से विचारों का आदान-प्रदान होता है। इससे सीखने की प्रेरणा प्रबल होती है।

उद्देश्य

1. विभिन्न संस्थाओं के लीडर्स द्वारा उपयोग किए जाने वाले डिजिटल संचार साधनों का अध्ययन करना।
2. विभिन्न संस्थाओं की टीमों द्वारा डिजिटल संचार साधनों के उपयोग का अध्ययन करना।
3. डिजिटल संचार के अर्थ का विस्तार से अध्ययन करना
4. संचार के विभिन्न साधनों का अध्ययन करना
5. डिजिटल इंडिया के अंतर्गत डिजिटल संचार साधनों के विस्तार का अध्ययन करना।
6. डिजिटल संचार कौशल विकसित करने के साधनों का अध्ययन करना
7. लीडर्स और टीमों के मध्य प्रभावी संचार का अध्ययन करना
8. विभिन्न टीमों व संस्थाओं के बारे में अध्ययन करना जो डिजिटल संचार कौशल का प्रयोग करती हैं।

विधि

डिजिटल संचार साधनों का प्रयोग बहुतायत से विभिन्न शैक्षिक संस्थानों व व्यावसायिक संस्थानों में किया जाता है। इसलिए विभिन्न संस्थाओं व कंपनियों में कार्य करने वाले व्यक्तियों से इंटरव्यू लेकर हमने उनसे डिजिटल संचार साधनों के बारे में जानकारी प्राप्त की और उनका विश्लेषण किया। आज के डिजिटल युग में भारत के अनेक बड़े महानगरों में अनेक कंपनियां हैं जो डिजिटल संचार साधनों का बहुतायत से प्रयोग करती हैं। कई कंपनियां तो अनेक देशों से संबंधित है जिन्हें मल्टीनेशनल कंपनी कहा जाता है। कुछ कंपनियां किसी एक देश से संबंधित है। जैसे कुछ जर्मनी की कंपनियां है कुछ अमेरिका की तो कुछ फ्रांस की। वैश्वीकरण के दौर में जब संपूर्ण विश्व की एक हो चुका है। तो हमें डिजिटल संचार माध्यमों का बहुत अधिक उपयोग करना पड़ रहा है। चाहे व्यक्तिगत रूप से उपयोग करना हो या सामूहिक रूप से आजकल कई परिवारों के सदस्य विदेशों में जाकर काम कर रहे हैं या अध्ययन के लिए वहां रह रहे हैं ऐसे में परिवारजन विभिन्न डिजिटल साधनो जैसे मोबाइल व लैपटॉप के द्वारा उनसे संपर्क में रहते हैं। विभिन्न व्यावसायिक कंपनियां कंप्यूटर व लैपटॉप के द्वारा भिन्न-भिन्न देश में रहने वाले अपने कर्मचारियों से संपर्क में रहती हैं। कंपनी के कर्मचारियों से बातचीत करने पर पता चला कि डिजिटल संचार कौशल से बहुत आसानी और कम समय में वह अपना कार्य कर पाते है। भारत के महानगर में बैठा व्यक्ति दूर देश में बैठे व्यक्तियों से संपर्क कर सकता है। किसी भी एक देश में स्थित कंपनी अन्य देशों में अपने प्रतिनिधि नियुक्त कर ऑनलाइन ही उनसे जुड़ी रहती है। एक शिक्षण संस्था के प्रिंसिपल से इंटरव्यू लेने पर उन्होंने बताया कि एडमिशन से लेकर अध्ययन करने तक हमें अनेक बार ऑनलाइन साधनों का सहारा लेना पड़ता है कोविड-19 के समय तो सभी क्लासेस ऑनलाइन ही ली गई। एक कंपनी के मैनेजर से बात करने पर उन्होंने बताया कि मैं अपने अधीनस्थों से ऑनलाइन जुड़कर उन्हें निर्देश देता हूं। ऑनलाइन सिस्टम के बिना हमारा कार्य संभव ही नहीं है क्योंकि हमारी कंपनी में अनेक देशों के व्यक्ति कार्य करते हैं।

तकनीकी शब्दों का पारिभाषीकरण

लीडर्स-लीडर्स से तात्पर्य है किसी भी संस्था या कंपनी को निर्देश देने वाला प्रमुख व्यक्ति जो उस संस्था या कंपनी के प्रबंधन को संभालता हो यह किसी कंपनी का मैनेजर भी हो सकता है विभिन्न कंपनियों में अलग-अलग प्रोजेक्ट के लिए अलग.अलग प्रोजेक्ट मैनेजर नियुक्त किए जाते हैं।जो अपने-अपने प्रोजेक्ट से जुड़े कर्मचारियों को निर्देश देकर प्रोजेक्ट को समय पर पूरा करते हैं विभिन्न कंपनियों में जिस प्रकार एक प्रोजेक्ट मैनेजर इस प्रोजेक्ट को पूरा करता हैै। उसी प्रकार किसी भी शैक्षिक संस्था जो सरकारी भी हो सकती है या प्राइवेट भी हो सकती है मे एक मुखिया होता है जो संपूर्ण गतिविधियों की देखरेख करता है निर्देश देता है और उसका प्रबंधन संभालता है ये निर्देशक हो सकता है या प्राचार्य भी हो सकता हैै। यह अधीनस्थ सभी कर्मचारियों पर नियंत्रण रखता है व उनके कार्यों का अवलोकन करता है। यह लीडर किसी स्वयंसेवी संगठन के भी हो सकते हैं ये अपने संगठन के कार्यों का संचालन करते हैं व अपने संगठन के सभी सदस्यों में कार्यों का बंटवारा करके कार्यों का संपादन करते हैं।

टीम- टीम से तात्पर्य है किसी भी संस्था या संगठन में कुछ लोगों का समूह जो एक साथ मिलकर किसी सामान्य मिशन या विशिष्ट उद्देश्य को पूरा करने के लिए कार्य करता है एक अच्छी टीम ऐसे लोगों का समूह है। जो सिर्फ अपने बारे में नहीं सोचते। हर व्यक्ति एक ही विजन और मिशन से बंधा होता है जो उनके काम को निर्देशित करता है वे सामूहिक सफलता को अपनी व्यक्तिगत सफलता जितनी ही महत्वपूर्ण मानते हैं। टीमों के कई प्रकार होते हैं ।टीमों के प्रकार टीम के सदस्यों के व्यवहार और कार्यशैली से तय होते हैं, जैसे-प्रोजेक्ट टीम, क्रॉस फंग्शनल टीम, स्वनिर्देशित, वर्चुअल टीम व समस्या समाधान टीम।

प्रोजेक्ट टीम- ये टीम किसी खास प्रोजेक्ट के लिए अस्थाई रूप से बनाई जाती है। प्रोजेक्ट पूर्ण होने पर यह टीम स्वतः ही समाप्त हो जाती है।

© 2026 डॉ. रमा सिंह. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

क्रॉस फंक्शनल- टीम इस टीम में अलग-अलग विभागों से आए हुए सदस्य होते हैं। इसमें अलग-अलग क्षेत्र के विशेषज्ञ शामिल होते हैं।
स्वनिर्देशित टीम- यह टीम बिना किसी प्रबंधक के कार्य पूरा करती है। उनकी टीम का कोई प्रबंधक नहीं होता। जो इस टीम के सदस्यों को निर्देश दे। बल्कि यह स्वयं निर्देशित होते हैं

वर्चुअल टीम-यह अलग-अलग जगह पर मौजूद सदस्यों से बनी टीम होती है यह ईमेल वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग और अन्य ऑनलाइन मैसेजिंग सिस्टम के जरिए आपस में जुड़े रहते हैं।

समस्या- समाधान टीम यह किसी खास समस्या को हल करने के लिए बनाई गई टीम होती है कार्यात्मक टीम यह विभाग के काम के लिए विशिष्ट काम करने के लिए गठित की जाती है।
अनुबंध टीम- यह टीम किसी परियोजना के एक भाग पर काम करने के लिए नियुक्त की जाती है परिचालन टीम यह टीम दूसरों को सहायता देने के लिए गठित की जाती है नेतृत्व वाली टीम इस यह नेतृत्व करने वाली टीम होती है।

समूह और टीम के बीच अंतर-
कार्य समूह के सदस्य कार्य दल के सदस्यों की तुलना में अधिक स्वतंत्र होते हैं। कार्य समूह के सदस्य प्रबंधकों से कार्य प्राप्त करते हैं। जबकि कार्य दल के सदस्य कार्य के वितरण अनुसार कार्य करते हैं। दल कार्य चर्चा और कार्य के परिणामों मे सक्रिय भागीदारी को बढ़ावा देते हैं। जबकि कार्य समूह इन चर्चाओं में कम शामिल होते हैं।

डिजिटल- इलेक्ट्रॉनिक्स की एक शाखा है। जिसमें विद्युत संकेत अंकीय होते हैं। अंकिय संकेत बहुत तरह के हो सकते हैं। किंतु बाइनरी डिजिटल संकेत सबसे अधिक उपयोग में आते हैं। शून्य/ एक, ऑन/ऑफ, हां/ नहीं, लो/ हाई आदि बाइनरी संकेतों के कुछ उदाहरण है। एक छोटी सी चिप में लाखों करोड़ों इलेक्ट्रॉनिक युक्तिया भरी जाने लगी हैं। तब से डिजिटल इलेक्ट्रॉनिक बहुत महत्वपूर्ण हो गई है। आधुनिक व्यक्तिगत कंप्यूटर, सेल फोन, डिजिटल कैमरा आदि डिजिटल इलेक्ट्रॉनिकी की ही देन है।

संचार- संचार का अर्थ अपने भाव, विचार, संदेश, ज्ञान व सूचना को दूसरों तक पहुंचाना है। अपने अनुभवों का परस्पर आदान-प्रदान ही संचार है। संचार की प्रक्रिया सर्पिल है। संचार सूचना के संप्रेषण की क्रिया है। संसार का प्रत्येक प्राणी अन्य प्राणियों से लगभग निरंतर ही सूचनाओं के आदान-प्रदान की आवश्यकता अनुभव करता है। आधुनिक संचार की नींव 19वीं तथा 20वीं शताब्दी में सर जगदीश चंद्र बोस, सैमुअल एफ, बी मोर्स, जी मार्कोनी तथा ग्राहम बेल के कार्य द्वारा डाली गई। 20वीं शताब्दी के पहले 50 वर्षों के पश्चात इस क्षेत्र में विकास की गति आश्चर्यजनक रूप से बढी हुई प्रतीत होती है।
संचार के साधन वे माध्यम हैं जिनके द्वारा सूचनाओं का आदान-प्रदान किया जाता है। इनमें पत्र पत्रिकाएं, रेडियो, टेलीविजन, फोन,इंटरनेट, सोशल मीडिया, सिनेमा, विज्ञापन वगैरह शामिल हैं।

संचार के साधनों का वर्गीकरण
मुद्रित माध्यम- पत्र पत्रिकाएं, समाचार पत्र।
श्रव्य साधन- रेडियो,टेलीफोन दृश्य श्रव्य माध्यम टेलीविजन, सिनेमा।
इलेक्ट्रॉनिक माध्यम- टेलीफोन, टेलीग्राफ, फैक्स, इंटरनेट, मोबाइल।
संचार के द्वारा प्रबंधन टीम के सदस्यों से पारस्परिक संबंध स्थापित करते हैं और बनाए रखते हैं। संचार के जरिए लोग एक दूसरे के दृष्टिकोण, व्यवहार और समझ को प्रभावित करते हैं। संचार के द्वारा ही लोग एक दूसरे के साथ सूचनाओं का आदान प्रदान करते हैं। संचार के द्वारा ही प्रबंधक कर्मचारियों की बात सुनते हैं और एक प्रेरणादायक कार्यस्थल बनाते हैं। संचार की प्रभावशीलता को बढ़ाने के लिए स्पष्टता, पूर्णता, ठोसपन, संक्षिप्तता, विचारशीलता और शिष्टाचार का ध्यान रखना चाहिए। संचार के आधुनिक साधन टेलीफोन रेडियो, टेलीविजन, फैक्स, ईमेल, सोशल मीडिया और वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग हैं। इनके द्वारा हम अपनी बातें साझा कर सकते हैं और दूसरों से आसानी से जुड़ सकते हैं। संचार के पारंपरिक मौखिक व लिखित साधनों के द्वारा संचार में समय अधिक लगता है। जबकि टेलीफोन, मोबाइल और एस एम एस जैसे साधनों से संदेश शीघ्रता से भेजे जा सकते हैं। वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग की मदद से दो या दो से ज्यादा लोग एक दूसरे से दूर अन्य स्थान पर बैठकर भी बात कर सकते हैं। ईमेल के जरिए एक संदेश को हजारों लोगों तक एक साथ पहुंचाया जा सकता है। आकाशवाणी, दूरदर्शन, फिल्में, समाचार पत्र और पत्रिकाएं भी जनसंचार के प्रमुख साधन है। इंटरनेट के जरिए हम शीघ्र दूसरे व्यक्तियों से सम्पर्क कर सकते हैं और अपनी बातें साझा कर सकते हैं। सोशल मीडिया के जरिए भी हम आसानी से दूसरों से जुड़कर अपनी बातें साझा कर सकते हैं।
आधुनिक युग में डिजिटल संचार मानव की प्रगति के लिए अति महत्वपूर्ण है। यह विश्व के एक देश में बसे लोगों को दूसरे देश में बसे लोगों से जोड़ता है प्राचीन काल में एक स्थान से दूसरे स्थान तक सदेश भेजने का कार्य दूतों द्वारा किया जाता था। किन्तु संचार के साधनों के प्रादुर्भाव से सदेश उसी समय ईमेल या व्हाट्सएप से दूसरे व्यक्तियों तक पहुंचाये जा सकते हैं। इंटरनेट के द्वारा हम दूसरे देशों में रहने वाले लोगों से बातचीत कर सकते हैं। वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग में हम उन्हें सामने देखकर बात कर सकते हैं।

डिजिटल संचार से जुड़े प्रमुख साधन ये हैं-

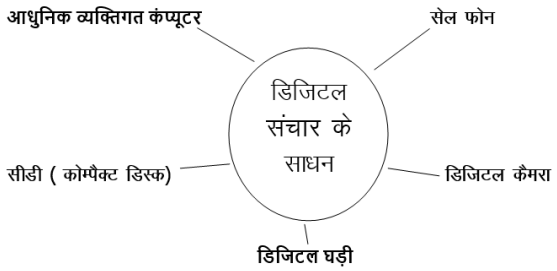

आज दुनिया भर में डिजिटल की धूम है। डिजिटल संचार कौशल से हम किसी भी समय और किसी भी तरह से योजनाओं का उपयोग कर सकते हैं ।डिजिटल संवाद के लिए अनेक साधनों का उपयोग किया जाता है ।डिजिटल संचार के जरिए नेता व टीम के बीच संचार के लिए विभिन्न तरीके अपनाए जाते हैं ।

© 2026 डॉ. रमा सिंह. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

1. डिजिटल प्रकाशन के द्वारा नेता व टीम के बीच संपर्क किया जा सकता है ।
2. टीम व नेता के बीच सोशल मीडिया से भी विचारों का आदान.प्रदान हो सकता है।
3. डिजिटल संचार कौशल से लीडर व टीम के बीच जुड़ाव बढ़ाया जा सकता है।

डिजिटल संचार के साधनों द्वारा डिजिटल संचार कौशल से निम्न के द्वारा संचार तीव्र गति से किया जा सकता है।

- इंस्टेंट मैसेजिंग,
- टेक्स्ट मैसेजिंग,
- ईमेल,
- ऑनलाइन चैट रूम,
- फोरम,
- वेब पेज,
- पॉडकास्ट,
- वीडियो
- वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग टूल जैसे कि स्काइप और जूम
- सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म जैसे ट्विटर और फेसबुक

कौशल- कौशल शब्द का अंग्रेज़ी अनुवाद स्किल होता है। कौशल का मतलब है निपुणता, कुशलता, चतुराई, मंगल, चतुर, कल्याण, धन, और खुशी किंतु हम यहां पर कौशल का जो अर्थ ले रहे हैं वह व्यक्ति का किसी कार्य में निपुण या कुशल होना। कौशल भारत या राष्ट्रीय कौशल विकास मिशन के अंतर्गत प्रधानमंत्री मोदी द्वारा शुरू किया गया। एक अभियान है जिसका प्रबंधन भारतीय राष्ट्रीय कौशल विकास निगम करता है। कौशल पर आधारित शिक्षा एक ऐसी शिक्षा प्रणाली है जिसमें बच्चे एक ही पाठ्यक्रम में एक साथ जरूरी जीवन कौशलों का ज्ञान प्राप्त करते हैं जीवन कौशल अपने जीवन को और आसान और सहज बनाना होता है इसमें सात्विक चिंतन, समय प्रबंधन, आग्रहिता, संबंधों में सुधार, स्वयं की देखभाल, विलंबन ना करना। असहायक आदतों से मुक्ति, पूर्णता वादी होना जैसे कौशल शामिल हैं।

कौशल शिक्षा- ये एक तरह की शिक्षा प्रणाली है जिसमें समस्त विद्यार्थियों को जीवन के लिए जरूरी कौशलों का ज्ञान मिलता है।

कौशल शिक्षा के लाभ

कौशल शिक्षा से विद्यार्थी भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार किए जाते हैं। इस प्रकार की शिक्षा से विद्यार्थियों को सिद्धांत के साथ-साथ अभ्यास का भी तरीका पता चलता है। कौशल शिक्षा के द्वारा विद्यार्थियों को एक ही पाठ्यक्रम में जरूरी सैद्धांतिक ज्ञान व विभिन्न जीवन कौशलों का पता चलता है।

तकनीकी कौशल- ये कौशल कला, विज्ञान, इंजीनियरिंग, प्रौद्योगिकी व गणित के क्षेत्रो में व्यावहारिक कार्यों को करने के लिए उपयोग की जाने वाली क्षमताओं व ज्ञान के समूह होते हैं। तकनीकी कौशल किसी विशेष कार्य या क्षेत्र से संबंधित विशिष्ट व व्यावहारिक योग्यता हैै। जैसे सॉफ्टवेयर या ऑपरेटिंग उपकरण का उपयोग करना। सॉफ्ट स्किल में वे पारस्परिक संचार कौशल शामिल होते हैं, जो प्रभावित करते हैं कि आप दूसरों के साथ कैसे बातचीत करते हैं। जैसे की नेतृत्व, टीमवर्क और समस्या समाधान।

तकनीकी कौशल के बारे में सोचना कि ये आईटी, डेटा साइंस या कंप्यूटर से ही संबंधित है सही नहीं है। तकनीकी कौशल वास्तव में विशिष्ट कार्य करने के लिए विशिष्ट योग्यताओं की योग्यता होना है। कोई भी उद्योग होए दैनिक कार्य निष्पादन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कुछ तकनीकी कौशलों का ज्ञान आवश्यक है। एस एच आर आई एम द्वारा किए गए एक अध्ययन से पता चलता है कि 83 प्रतिशत शेयर धारकों ने सेमेस्टर की गुणवत्ता में गिरावट का अनुमान लगाया है उसमें एक सिद्धांत ने तकनीकी कौशल की कमी को बताया है इसके लिए इंटरनेट पर आधारित गैजेट्स द्वारा अतिरिक्त तकनीकी कौशल बनाए रखने वाले अभ्यर्थी अधिक जोड़ना आवश्यक बताया है।

तकनीकी संचार कौशल का शिक्षा में उपयोग- तकनीकी संचार कौशल का आज शिक्षा में बहुतायत से प्रयोग होता है आधुनिक युग में ऑनलाइन क्लासेस होती हैं जो विभिन्न संस्थाओं द्वारा आयोजित की जाती हैं। विभिन्न कोचिंग संस्थानों में भी ऑनलाइन क्लासेस होती हैं। कई कोचिंग संस्थान तो ऑनलाइन ही हैं। विभिन्न शिक्षण संस्थानों में भी विभिन्न व्हाट्सएप ग्रुप बनाए जाते हैं जिनमें सभी विद्यार्थी जुड़े होते हैं और समय.समय पर विभिन्न सूचनाएं उन्हें इसके द्वारा दी जाती हैं। कभी.कभी किसी विशेष कारण होने पर फोन करके विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है। विभिन्न शैक्षिक सम्मेलनों का आयोजन विभिन्न शैक्षिक संस्थाएं कराती हैं जो ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों तरह से संपन्न कराए जाती हैं। ये सम्मेलन राष्ट्रीय व अंतर राष्ट्रीय स्तर के होते हैं ।

आधुनिक समय में तो विभिन्न एडमिशन फॉर्म भी ऑनलाइन ही जमा होते हैं इसी तरह परीक्षा फॉर्म भी ऑनलाइन ही भरे जाते हैं बाद में हार्ड कॉपी संस्था में जमा होती है अनेक कोर्सेज ऑनलाइन ही होते हैं जैसे किसी भाषा को सीखने के लिए किसी कंप्यूटर की जानकारी के लिए व किसी व्यावसायिक ट्रेनिंग के लिए दूरस्थ शिक्षा में भी इसका प्रयोग बहुतायत से किया जाता है। विभिन्न खुला विश्वविद्यालय जैसे कोटा खुला विश्वविद्यालय व इंदिरा गांधी राष्ट्रीय खुला विश्वविद्यालय आदि में भी ऑनलाइन सूचनाओं का आदान.प्रदान होता है। इंदिरा

© 2026 डॉ. रमा सिंह. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

गांधी राष्ट्रीय खुला विश्वविद्यालय में अनेक देशों के विद्यार्थी अध्ययन करते हैं वे सभी ऑनलाइन ही विश्वविद्यालय से जुड़े रहते हैं
ई लाइब्रेरी का प्रचलन आजकल हो गया है। हम किसी भी पुस्तक को ऑनलाइन पढ़ सकते हैं सभी पुस्तकें ई लाइब्रेरी से जोड़ दी जाती हैं। विभिन्न पुस्तकों के अलावा विभिन्न समाचार पत्र व पुस्तिकाएं भी हम ऑनलाइन पढ़ सकते हैं। किसी भी विषय व टॉपिक से संबंधित जानकारी हम ऑनलाइन प्राप्त कर सकते हैं। विभिन्न शब्दकोश भी हमें ऑनलाइन ही प्राप्त हो जाते हैं हम किसी भी शब्द का अर्थ गूगल पर सर्च करके जान सकते हैं। फ्रेंच, इंग्लिश, जर्मन किसी भी भाषा के शब्दों को हम ऑनलाइन जान सकते हैं। विभिन्न कोर्सेज को भिन्न-भिन्न देश में रहने वाले विद्यार्थी एक साथ करते हैं ये ऑनलाइन ही किए जाते हैं इंटरनेट के द्वारा गूगल पर सर्च करके हम किसी भी स्थान के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं व किसी भी विषय के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। इस प्रकार अनौपचारिक शिक्षा हम ऑनलाइन भी प्राप्त करते हैं। अंत में हम कह सकते हैं कि औपचारिक निरौपचारिक व अनौपचारिक शिक्षा में डिजिटल साधन एक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं।

कंपनियो मे तकनीकी संचार कौशल विभिन्न मल्टीनेशनल कंपनियों में लीडर्स ऑनलाइन साधनों के द्वारा ही अपनी टीमों से जुड़े रहते हैं। ये कंपनी के सदस्यों के लिए इंटरव्यू भी ऑनलाइन ही लेते हैं फिर उन्हें नियुक्त करते हैं तत्पश्चात ऑनलाइन ही टीम के सदस्यों से वार्तालाप करते हैं और कंपनी के कार्यों को संपादित करते हैं। विभिन्न सदस्य अपने लीडर के सम्मुख प्रेजेंटेशन देकर अपने कार्य के बारे में जानकारी देते हैं। डिजिटल साधन ही इन कंपनियों का आधार है। कंपनी के सदस्य समय.समय पर एक दूसरे को अपने कार्य के बारे में बताते रहते हैं। कोरोना महामारी के दौरान कंपनियों और शिक्षण संस्थानों में ऑनलाइन ही कार्य किया जाता था। सभी स्कूल कॉलेज में ऑनलाइन क्लासेस होती थी और सभी विद्यार्थी घर पर बैठकर ही अपने संबंधित शिक्षक से शिक्षा प्राप्त करते थे। कंपनियों में भी वर्क फ्रॉम होम की परिपाटी चल पड़ी। कई कंपनियों में तो अभी भी सप्ताह के कुछ दिन कर्मचारियों को घर से ही कार्य करना होता है कई विदेशी कंपनियां भारत में रहने वाले लोगों से ऑनलाइन ही काम करवाती हैं।

Table:1 डिजिटल कम्युनिकेशन की शिक्षा में उपयोगिता तथा कमियां

कौशल	उपयोगिता	कमियाँ
डिजिटल संचार कौशल		
मौखिक संचार कौशल	समझ और सद्भावना विकसित होती है।तत्काल फीडबैक दिया जा सकता है।मानवता विकसित होती है।	शिक्षक की डिजिटल जानकारी पर निर्भरता रहती है।इंटरनेट की उपलब्धता पर ही निर्भर होना पड़ता है।
लिखित संचार कौशल	नई विषय वस्तु प्रस्तुत की जा सकती है।प्रदर्शन के लिए सर्वश्रेष्ठ।शिक्षक की सृजनात्मकता व डिजिटल संचार कौशल पर निर्भरता।	उसी समय पुनर्बलन देने में असुविधाजनक।
ट्रेनिंग मैनेजमेंट	शिक्षण में सुधार संभव।अध्ययन आदतों के निर्माण में सहायक।	कंप्यूटर, लैपटॉप व मोबाइल पर निर्भरता।शिक्षक के अच्छा समय प्रबंधक न होने पर असफल।सॉफ्टवेयर उपलब्ध होने पर निर्भर।

निष्कर्ष-

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि आज के डिजिटल युग में बिना डिजिटल संचार कौशल के कोई भी संस्था अपना कार्य पूर्ण नहीं कर सकती है चाहे शैक्षिक संस्था की टीम हो, स्वयं सेवी संस्था की टीम हो या कोई मल्टीनेशनल कंपनी हो। सभी संस्थाओं में आजकल ऑनलाइन ही कार्य किया जाता है। ऑनलाइन साधनों से त्वरित गति से सूचनाओं को दूसरे व्यक्ति तक पहुंचाया जा सकता है जिससे कार्य शीघ्रता से पूरा किया जा सकता है।
किंतु फिर भी लोगों के बीच मे मानवीय भावना के संचार के लिए कभी-कभी वास्तविक रूप में भी लोगों का मिलना अनिवार्य होता है। शैक्षिक संस्थाओं में क्लास रूम में शिक्षक जो शिक्षण के अलावा भी कुछ अनोपचारिक बातें विद्यार्थियों को बताते हैं वे उनके जीवन को उन्नत बनाती हैं। कक्षा में भलीभांति विद्यार्थियों को अध्ययन की ओर प्रेरित किया जा सकता है। अंत में यह कहा जा सकता है कि डिजिटल संचार कौशल आज के डिजिटल युग में एक अनिवार्य आवश्यकता बन गई है किंतु इस कौशल के साथ-साथ हमें अपने संस्कार और संस्कृति को भी बनाए रखना है तभी एक सुगठित व समृद्ध गुणवान समाज की स्थापना हो सकेगी।

सुझाव

- सभी शैक्षिक सस्थानों चाहे वह सरकारी हो या गैर सरकारी उनमें डिजिटल संचार के साधन अनिवार्य रुप से उपलब्ध कराये जाने चाहिए।
- सभी संस्थानों में आवश्यक सॉफ्टवेयर भी उपलब्ध होने चाहिए।
- सभी संस्थानो में इंटरनेट की उपलब्धता होना भी आवश्यक है।
- सभी संस्थानों में तकनीकी कौशल में प्रशिक्षित शिक्षकों की नियुक्ति की जानी चाहिए।
- सभी शिक्षण संस्थाओं में विद्यार्थियों को कंप्यूटर शिक्षण के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए।
- विभिन्न कंपनियों व शिक्षण संस्थानों में टीम के लीडर को डिजिटल संचार कौशल में पारंगत होना चाहिए।
- विभिन्न संस्थाओं व कंपनियों के सदस्यों को डिजिटल लैंग्वेज कोर्स कराए जाने चाहिए।
- सही समय व सही जगह पर सवाद किया जाना चाहिए।
- डिजिटल संवाद के समय संवाद के माध्यम का भी ध्यान रखना चाहिए।
- सभी को बोलने का अवसर दिया जाना चाहिए।
- एक अच्छी तैयारी के बाद ही डिजिटल संचार किया जाना चाहिए।
- सकारात्मकता से डिजिटल संचार किया जाना चाहिए तथा अगले चरण के लिए लिखित संचार होना चाहिए।

© 2026 डॉ. रमा सिंह. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

संदर्भ

1. ResearchGate. Online classes [Internet]. [cited 2026 Feb 11]. Available from: https://www.researchgate.net
2. Creatoaurus. Creatoaurus.io [Internet]. [cited 2026 Feb 11]. Available from: https://creatoaurus.io
3. Wikipedia. Wiki [Internet]. [cited 2026 Feb 11]. Available from: https://m.wikipedia.org
4. Infinity Learn. Infinity Learn [Internet]. [cited 2026 Feb 11]. Available from: https://infinitylearn.com
5. Vedantu. Vedantu learning platform [Internet]. [cited 2026 Feb 11]. Available from: https://www.vedantu.com
6. Skillmaker, AV Northeast University. Skillmaker [Internet]. [cited 2026 Feb 11]. Available from: https://www.skillmaker.edu
7. Northeastern University. Bachelor's completion program [Internet]. [cited 2026 Feb 11]. Available from: https://bachelorscompletion.north-eastern.edu
8. Microsoft. Microsoft official website [Internet]. [cited 2026 Feb 11]. Available from: https://www.microsoft.com
9. American Society for Quality (ASQ). ASQ official website [Internet]. [cited 2026 Feb 11]. Available from: https://asq.org
10. Wikipedia Hindi. हिंदी विकिपीडिया [Internet]. [cited 2026 Feb 11]. Available from: https://hi.wikipedia.org
11. Uttarakhand Open University. Official website [Internet]. [cited 2026 Feb 11]. Available from: https://uou.ac.in
12. Taylan K. Kamil Taylan Blog [Internet]. [cited 2026 Feb 11].
13. Frontiers. Frontiers in research publishing [Internet]. [cited 2026 Feb 11]. Available from: https://www.frontiersin.org

Creative Commons License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–NonCommercial–NoDerivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) License. This license permits users to copy and redistribute the material in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and the source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted.

About the corresponding author

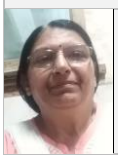

डॉ. रमा सिंह ओम कोठारी शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान, कोटा, राजस्थान में सहायक आचार्य के रूप में कार्यरत हैं। वे शिक्षक शिक्षा, शैक्षिक मनोविज्ञान और नवीन शिक्षण विधियों के क्षेत्र में सक्रिय हैं। उनका लक्ष्य गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान कर भावी शिक्षकों को सक्षम, संवेदनशील और नवाचारी बनाना है।

© 2026 डॉ. रमा सिंह. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/